वायरल वीडियो में संघ के तथाकथित आंतकवादी चाल-चरित्र के दावे

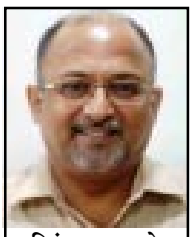

निरंजन टाकले
पूर्व रिपोर्टर, सीएनएन आईबीएन

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

सोशल मीडिया पर इन दिनों 'अमित शाह का राजदार जिसको सुनकर हैरान हो जाएंगे' शीर्षक से एक वीडियो खूब शेयर की जा रही है। करीब आधे घंटे के इस वीडियो में निरंजन टाकले नाम का व्यक्ति 'संघ का आतंक और न्याय व्यवस्था की असफलता' विषय पर अपने दावे करता नजर आ रहा है। वक्ता के दावों की मजदूर मोर्चा पुष्टि नहीं करता लेकिन संघ अथवा भाजपा ने आजतक इसका खंडन भी नहीं किया है।

वक्ता निरंजन टाकले शुरुआत करते हैं कि हेमंत करकरे द थ्रेटेन लेगेसी यह सब्जेक्ट है, दरअसल बताया गया कि अगस्त 2006 में मालेगांव में पहला बम ब्लास्ट हुआ था। यह शबे बरात का दिन था और इस दिन काफी तादाद में मालेगांव में लोग आते हैं। उस दिन दोपहर को दो बजे के करीब सबसे पहले हमीदिया मस्जिद में बम ब्लास्ट हुआ, फिर बड़ी मस्जिद के अंदर पीछे स्थित कब्रिस्तान में दूसरा ब्लास्ट हुआ, तीसरा मस्जिद के गेट पर हुआ और चौथा उसी के पास के मुशावरत चौक में हुआ था। यह ब्लास्ट अगस्त 2006 में हुए थे।

डांग जिले में नवापुर इलाका है। इस (बम ब्लास्ट की घटना) से पहले 18, फरवरी 2006 को नवापुर में बर्ड फ़्लू फैलने की खबरें उड़ाई गईं थीं। करीब पंद्रह लाख मुर्गियों को मार कर उन्हें दफनाना पड़ा था। उस वक्त सीएनएन आईबीएन के स्ट्रिंगर की हैसियत से पहले मैं वहां गया था। वहां मैने पाया कि वहां का पोल्ट्री बिजनेस 100 प्रतिशत मुसलमान चलाते हैं, बाकी ट्राइबल पापुलेशन है। नवापुर से करीब बीस किलोमीटर दूरी पर पंद्रह दिन पहले जनवरी के अंत और फरवरी की शुरूआत में आदिवासियों को हिंदू बनाने के लिए एक शबरीकुंभ नाम का कुंभ आयोजित किया गया था। इसका आयोजन असीमानंद ने किया था, असीमानंद का आश्रम वहीं पर था। 1998-99 में नासिक में हालात ऐसे थे कि वहां दुर्गा वाहिनी, बजरंग दल के ट्रेनिंग कैंप होते थे और जैसे ही ट्रेनिंग कैंप खतम हुआ तीन दिन बाद डांग में चर्च जलाया गया। कड़वन अभोना नाम की जगह है वहां पर क्रिश्चियन हॉस्टलों पर हमला किया गया। इस तरह यह दो तीन जगहें हैं जहां दो-तीन दिन के अंतराल में इस तरह की वारदातें हुई थीं।

2006 में इस तरह की घटनाओं के होने से क्रोनोलॉजी मन में थी, इसके आधार पर मन में यह संदेह हुआ था कि पंद्रह दिन पहले जो शबरीकुंभ हुआ है क्या उसका और इस बर्ड फ़्लू बीच कोई कनेक्शन है? क्योंकि बर्ड फ़्लू से नवापुर की पूरी इकोनॉमी ध्वस्त हो गई थी। उस वक्त बताया गया था कि बर्ड फ़्लू की रिपोर्ट भोपाल की एक लेबोरेटरी से आई है, इस रिपोर्ट में बताया गया था कि यहां (नवापुर इलाके) की मुर्गियों में बर्ड फ्लू पाया गया है।

कर्नल पुरोहित | साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर | असीमानंद | दयानंद पांडे

पत्रकार होने के नाते हमने मुर्गीपालन केंद्र के मालिकों से पूछा तो उन लोगों ने बताया कि वह लोग तो अपनी मुर्गियां सूरत-मुंबई भेजते हैं, मध्य प्रदेश तो मुर्गी भेजते ही नहीं हैं, पता ही नहीं यह रिपोर्ट कहां से आई है। एनिमल हस्बेंड्री विभाग को भी पता नहीं था कि यह रिपोर्ट भोपाल से कैसे आई है। इस पर मैं लेबोरेटरी का सत्यापन करने के लिए वह रिपोर्ट लेकर उसमें बताए पते पर भोपाल गया, लेकिन वहां पाया कि इस तरह की कोई लेबोरेटरी है ही नहीं।

उस पते पर इस तरह की किसी लैब का कोई वजूद ही नहीं था। यानी यह रिपोर्ट एक फर्जी डॉक्यूमेंट थी जिसके जरिए अफवाह फैलाई गई थी कि वहां पर बर्ड फ़्लू है, सारी मुर्गियां मार कर वहां की पूरी इकोनॉमी ध्वस्त की गई। तब अनजाने में मैने यह रिपोर्ट की थी कि शायद इससे भी बड़ा कुछ हो सकता है, और अगस्त में यह बम ब्लास्ट हुआ।

2006 में जब यह ब्लास्ट हुआ तो हमारी सीएनएन आईबीएन की रिपोर्टर तोरल वारिया मुंबई से आई थीं। तोरल वारिया की कार एक कॉनवाय को फॉलो कर रही थी। एक जगह कुछ पानी पड़ा हुआ था। जब कार वहां पहुंची तो कार से पानी की छींटे उछलीं और पुलिस अधिकारी की वर्दी पर पड़ गईं। पुलिस अधिकारी ने कार के ड्राइवर और तोरल वारिया को बुरी तरह से पीटा। हम लोग इसकी कंप्लेंट करने के लिए मालेगांव के छावनी पुलिस स्टेशन गए थे। उस वक्त केपीएस रघुवंशी एटीएस के चीफ थे और जैन नासिक डिवीजन के आईजी थे। जैन ने (मालेगांव बम ब्लास्ट के) दो सस्पेक्ट्स के स्केच जारी किए थे। बताया गया कि यह सारे बम लगाने के लिए मालेगांव की एक साइकिल की दुकान से साइकिल खरीदी गई थीं।

दुकान पर जिस शख्स ने साइकिलें बेचीं थी उसने जो हुलिया बताया उसके आधार पर स्केच तैयार किए गए हैं। उसको यह इसलिए याद रहा कि दो लोग ही चार साइकिल खरीदने आए थे और साइकिलों में कैरियर लगवाने पर अड़े हुए थे। दोनों अपने दोनों हाथों में दो-दो साइकिलें लेकर गए इसलिए भी उसे उनकी शक्लें याद रहीं। जो स्केच बनवाई गई थीं उसमें दोनों शख्स क्लीन शेव थे। तोरल वारिया के केस में कंप्लेंट करने मैं छावनी पुलिस स्टेशन गया था, वहां एक लड़का बैठा हुआ था। हरे रंग की पैंट, गुलाबी रंग की शर्ट और एकदम अलग ही रंग की चप्पलें पहने हुए था, हल्की सी दाढ़ी थी। करीब एक डेढ़ घंटा मैं वहां रहा इस दौरान वह भी वहां बैठा हुआ था, उसके अजीब पहनावे की वजह से मैं उसकी तरफ देख रहा था और वो मेरे ध्यान में रहा था।

बाद में हमको कहा गया कि पीछे एसपी ऑफिस के लॉन में प्रेस कॉन्फ्रेंस हो रही है आप वहां पर जाइए तो हम लोग वहां चले गए। वहां पहले दिन ही एटीएस ने इन्वेस्टिगेशन टेकओवर कर लिया था, लेकिन उसके पहले ही आईजी ने संदिग्धों के स्केच जारी कर दिए थे। एटीएस के केपी रघुवंशी ने उस वक्त वहां एलान किया कि हमने पहले सस्पेक्ट को अरेस्ट कर किया है जिसका नाम है नूरुल हुडा। वह लड़का जो वहां पर मेरे सामने करीब डेढ़ घंटे बैठा था उसको बुर्का पहना कर लाया गया और कहा गया कि यही वह संदिग्ध है। लेकिन उसकी शर्ट, पैंट और स्लीपर की वजह से मैं पहचान गया कि यह वही लड़का है जो दो घंटा वहां आराम से बैठा हुआ था, तो यह कैसे संदिग्ध आतंकी हो सकता है? क्योंकि जो धमाका हुआ है उसमें 37 लोगों की जान गई है 200 से ज्यादा गंभीर हालत में जख्मी हैं। ऐसे ब्लास्ट के लिए जो संदिग्ध पकड़ा जाता है वह दो घंटा आराम से कुर्सी पर बैठा है यह बहुत ही अजीब था।

दूसरी बात नूरुल हुडा की जो दाढ़ी थी वह कम से कम सात आठ महीने रखी हुई है। समझ में आ रहा था कि जो संदिग्ध थे वो क्लीनशेव थे, तो दो दिन में इतनी बड़ी दाढ़ी तो आ नहीं सकती। उसी दिन बाद में तीन और संदिग्ध लोगों को गिरफ्तार किया गया। कुल आठ दस लोगों को गिरफ्तार किया गया। हर एक आरोपी की दाढ़ी कम से कम दो से तीन साल से रखी हुई थी और जो क्लीन शेव वाले सस्पेक्ट्स की स्केच जारी की गई थी उनमें से कोई भी पकड़ा नहीं गया था।

वो स्केच लेकर हम धुलिए और मालेगांव के बीच धोड़ामबे नाम से एक जगह है, वहां से लेकर चांदवड़ तक अस्सी किलोमीटर के दायरे में हर ढाबे, पेट्रोल पंप, हर होटल पर घूमे। एक राधिका नाम के होटल वालों ने हमें बताया कि हां ये हमारे यहां आए थे, रुके थे। उनकी एंट्री होटल के रजिस्टर में रामजी कालसंगरा, संदीप डांगे दर्ज थी, यह दोनों उस होटल में अपने नाम से रुके थे। तो उसके जरिए हमने एक न्यूज की थी कि जो पकड़े गए टेररिस्ट हैं वो सारे गलत हैं। झूठे लोगों को पकड़ा गया है फंसाया गया है। जो सस्पेक्ट्स हैं उनके नाम इस तरह से हैं, जो स्केचेस थे उसके आधार पर उनके नाम यह हैं और वह इस इस होटल में रुके थे। लेकिन उसका बाद में कुछ हुआ ही नहीं।

2008 में जब मालेगांव में बम ब्लास्ट हुआ भीकू चौक में, एलएमएल फ्रीडम मोटर साइकिल थी, और उसके बाद काफी इन्वेस्टिगेशन हुई जिसमें उस दौरान चालीस हजार टेलीफोन कॉल्स टैप किए गए थे। बाद में हर संदिग्ध टेलीफोन कॉल का ट्रैकिंग किया गया था। मिसाल के तौर पर एक कॉल ऐसा था कि एक विशेष नंबर पर 6-7 नंबर से काल आए थे कि मिस्वाक खत्म हो गया है तुरंत भेजिए। इतनी ही बातचीत थी, उन्होंने इसे ट्रैक किया था। बाद में पता चला था कि किसी आश्रमशाला में रहने वाले लोगों ने वह मिस्वाक जो दंतमंजन है उसके लिए फोन किया था।

तो इस तरह से कई फोन कॉल्स ट्रैक किए गए थे उनमें से एक टेलीफोन था जिसमें बात करने वाली औरत यह पूछती है कि मैंने कहा था कि मेरी बाइक इस्तेमाल मत करो, और अगर की तो सिर्फ 6 क्यों मरे? फिर उसकी पूरी बातचीत हुई और वो कॉल रामजी कालसंगरा और प्रज्ञा सिंह की निकली था। तो उन पर आने वाले कॉल फिर ट्रैक होने लगे। यहां पर जो बातें हो रही हैं कि एनआईए ने प्रज्ञा सिंह के लिए कहा कि उनका कोई रोल नहीं है इस पूरे अपराध में। मैने इस पर वीक मैग्जीन में वाय ओनली सिक्स किल्ड (केवल छह ही क्यों मारे गए) शीर्षक से 6 साल पहले स्टोरी की थी। यह स्टोरी इन सभी आरोपियों के बीच हुई 414 मिनट की बातचीत और वीडियो ट्रांस्क्रिप्ट्स के आधार पर लिखी गई थी। मेरे पास यह सभी ट्रांस्क्रिप्ट्स हैं जिनमें से कुछ मैं अपने साथ लाया हूं। यह 414 मिनट की बातचीत एटीएस के पास मौजूद है और कोर्ट में भी प्रस्तुत की गई है। इन ट्रांस्क्रिप्ट्स में सिर्फ मालेगांव ब्लास्ट ही नहीं, हिंदू राष्ट्र निर्माण, संविधान को नकारना और इजराइल या थाईलैंड में एक निर्वासित सरकार का गठन करना, जिसके लिए कर्नल पुरोहित थाईलैंड और इजराइल से जो संपर्क साध रहे थे, वह बातें हैं। लेकिन इन सारी ट्रांस्क्रिप्ट्स को नकारते हुए अगर एनआईए यह कहती है कि प्रज्ञा सिंह ठाकुर का इसमें कोई रोल नहीं है तो यह अपने आप में बहुत संदेहजनक है क्या यह जांच वाकई न्याय दिलाने के लिए हो रही है।

क्योंकि यदि मैं अपनी मोटर साइकिल किसी को देता हूं और यदि उससे कोई दुर्घटना होती है तो वाहन का मालिक होने के कारण मेरे खिलाफ केस दर्ज होगा। इस मामले में मालिक ने अपना वाहन दिया है और वाहन का इस्तेमाल लोगों की जान लेने के लिए किया गया है। बावजूद इसके जांच एजेंसी कहती है कि वाहन की मालिक इसमें संलिप्त नहीं हैं।

दयानंद पांडेय जो खुद को शंकराचार्य बताता है, मालेगांव ब्लास्ट का आरोपी है, उसकी आदत है कि वह किसी भी व्यक्ति के साथ बैठक करता तो उसकी वीडियो रिकॉर्डिंग बना लेता था। एटीएस ने ऐसी 34 वीडियो बरामद कीं, उनकी भी ट्रांस्क्रिप्ट्स उपलब्ध हैं। उन सारी बैठकों में कहां साजिश रची गई, कहां निर्वासन में सरकार बनाई जानी है, कैसे धन का प्रबंध करना है और कैसे विस्फोटक का प्रबंध करना है सभी बिंदुओं पर विचार विमर्श किया गया है। इन सभी वीडियो में प्रज्ञा सिंह मौजूद रहीं। कई बैठकों की तो उसने अध्यक्षता की, एक बैठक में तो वह मालेगांव में कराए जाने वाले विस्फोट के लिए बम रखने वाले लोगों को उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी लेती दिखाई गई है। इतने सुबूत होने के बावजूद एजेंसी कहती है कि प्रज्ञा सिंह का कोई रोल नहीं है और वह आरोपी नहीं हो सकती। उन सभी 34 वीडियो में सभी आरोपी मौजूद हैं और साजिश रचते हुए दिखाई दे रहे हैं। वह निर्वासन में सरकार का गठन करने के राष्ट्र विरोधी एजेंडे पर विचार विमर्श कर रहे हैं, बावजूद इसके एजेंसी कहती हैं कि इस मामले में महाराष्ट्र ऑर्गनाइज्ड क्राइम एक्ट (मकोका) लागू नहीं होता। यह कैसे संभव है, जब सभी लोग मौजूद हैं, एक संगठित ढंग से साजिश पर विचार-विमर्श कर रहे हैं और आप कह रहे हैं कि यह संगठित अपराध नहीं है तो यह बहुत ही संदिग्ध है।

रमेश उपाध्याय और राकेश पुरोहित के बीच में जो बातचीत हुई है उसके ट्रांस्क्रिप्ट्स हैं, लेकिन इन दस्तावेजों का जिक्र भी एनआईए नहीं करती है जबकि एटीएस ने इसका जिक्र किया था। इसकी एक वजह है कि इनमें दो वीडियो ऐसे हैं

शेष पेज सात पर